Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JUNE-JULY, 2020, VOL- 8/40

शिक्षक बनने के लिए कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियो में केरियर केप्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन

घनश्याम शमा [1], Ph.D. , जगदीश चन्द्र शर्मा [2] & उर्मिला शर्मा

[1]*प्राचार्य महर्षि दाधीत शि.प्र. महाविद्यालय केशवपुरा कोटा*

[2]*प्राध्यापक, डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इन्दौर*

Abstract

अध्यापक शिक्षा से लम्बे समय से जुडे होने के कारण ऐसा अनुभव किया कि प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद लगभग सभी विद्यार्थी विभिन्न कोचिग कक्षाओ से जुडकर अध्यापक भर्ती परीक्षाओ की तैयारी मे व्यस्त हो जाते है। इसमे पुरूष तथा महिला दोनो ही कोचिग के लिए प्रेरित होते है और इस दोरान वह कई प्रकारो के दबाव व तनाव को अनुभव करते है प्रस्तुत शोंधपत्र द्वारा हमने इस दबाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है। तथा हमने यह अनुभव किया कि महिलाओ की अपेक्षा आर्थिक दबाव पूरूषो पर अधिक होता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

आज की प्रतिस्पर्धा के युग में शिक्षा का स्वरूप दिनो दिन बदलता जारहा हैं।समाज का हर वर्ग अपने बच्चों की शिक्षा के लिए चिंतित नज़र आताहै। तेजी से बढ़ते आर्थिक एवं वैज्ञानिक युग ने शिक्षा के महत्त्व को ओर बढ़ादिया है। प्रश्न यह भी उठता है कि आज की शिक्षा कितनी सार्थक है? क्यावर्तमान शिक्षा पद्धति छात्र का समग्र विकास कर उसे राष्ट्र के नवनिर्माण केलिए समर्पित एवं सुसंस्कारित बना सकती हैं? नहीं, क्योकि पाठ्यपुस्तकों मेंहमारे महापुरूषों व पथ प्रणेताओं की जीवनी तथा सांस्कृतिक मूल्यों का अभावहै। वर्तमान समय में शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाऐं दोनों ही अपने बुनियादी लक्ष्यसे भटककर महज समय बिताने एवं धन कमाने के चक्रव्यूह में इस कदरजकड़कर रह गये है कि चाहकर भी बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। और इसकी वास्तविक जड में है शिक्षक।

वर्तमान मे सबसे ज्यादा बेरोजगारी बी.एड. प्रशिक्षणार्थियो की बढ़ रहीहै। एक और जहाँ हर वर्ष 1 से 1.50 लाख विद्यार्थी बी.एड. का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। वहीं दूसरी और सरकार की तरफ स शिक्षक भर्ती परीक्षा के नाम पर मात्र कुछ हजार वेकेंसी ही निकाली जाती हैं। वह भी साल–दो साल में तबतक प्रशिक्षणार्थी कोचिंग मे लाखो रूपऐं खच कर देते हैं। ऐसी स्थिति मे कुछ हजार वेकेंसी मात्र उनके लिए ऊँट के मुँह में जीरा के बराबर होती हैं। जिससेप्रशिक्षणार्थियों में केरियर को लेकर हमेशा असमंजस की स्थिति बनीं रहती हैं।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जिससे उनका मानसिक व शारीरिक सन्तुलन भी सही नहीं रहता हैं। वे घोरनिराशावादी व हताश होकर अपने गाँव की और वापिस चले जाते हैं। केरियरको लेकर बढ़ते दबाव से प्रशिक्षणार्थी समाज मे भी अपन को असहाय निसकोंचएवं हीन समझने लगता हैं। वह कही उत्सव, भाादी समारोह पिकनिक या वार्षिक उत्सव में भी जाने से कतराने लगता हैं। वह समाज के लोगो के साथकोचिंग मे छात्रों के साथ अपने–आप को समायोजित नहीं कर पाता हैं। इस समस्या कों समझने के लिये सर्व प्रथम अम दबाव को समझने का प्रयास करते है।

दबाव का सम्प्रत्यय :–

दबाव का सम्प्रत्यय मनोविज्ञान में भौतिक विज्ञान से लिया गया है।19वीं सदी में दबाव उस बल को कहते हैं जो भौतिक वस्तु या व्यक्ति पर बाह्यशक्ति द्वारा डाला जाता है। प्रतिबल का व्यक्ति तथा वस्तु इसलिए विरोध करतेहैं ताकि वे अपनी मूल अवस्था में बने रहे है। बाद में मनोविज्ञान के क्षेत्र मेदबाव शब्द का प्रयोग व्यक्ति की शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं मेआने वाले परिवर्तनों के कारण उसके ऊपर पड़ने वाले दबाव के लिए प्रयोगकिया जाने लगा। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में नित्य प्रतिदिन किसी न किसीप्रकार के प्रतिबलों का सामना करना पड़ता है। लम्बे समय तक चलने वालादबाव व्यक्ति के स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकता है अतः हमें सतर्क रहकरदबाव का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिये।

दबाव क्या है?

दबाव के कारण व्यक्ति अपनी अभियोग्यता तथा क्षमताओ के अनुरूप निष्पादन नहीं कर पाता है। फ्रायड भी कहते हैं कि Source of abnormalityis stressलेकिन दबाव सभी स्थितियों में हानिकारक नहीं होता है कईपरिस्थितियों में इसका सकारात्मक येागदान भी रहता है जैसे परीक्षा में भागलेने के लिए विद्यार्थी तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए खिलाड़ी दबाव

के कारण कुछ दिनों पूर्व ही कठिन परिश्रम करके अच्छा प्रदर्शन करने मेंसफलता प्राप्त करते हैं। जब किसी खतरे अथवा भय की आशंका होती है तोहमारी नाड़ी की गति तथा श्वास लेने की गति अचानक बढ़ जाती है।मांसपेशियो में तनाव उत्पन्न हो जाता है तथा ज्ञानेन्द्रियाँ तेजी से कार्य करनेलगती है। इसीलिए कहा गया है कि–

"Stress is good servant but a badmaster."

प्रसिद्ध विद्वान हेन्स सेले (1956) कहते हैं कि ''प्रतिकूल दशाओ में व्यक्ति शारीरिक–मानसिक दृष्टियों से विषाद–संकुचन को प्राप्त होता है''

अर्थात् तीन अवस्थाएँ आती है –

1. पहली अवस्था में व्यक्ति आश्चर्य एवं सावधान की स्थिति में होता है।
2. दूसरी अवस्था में व्यक्ति प्रतिरोध प्रकट करने लगता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

3. तीसरी अवस्था में थककर निपटने की कोशिश करता है।

दबाव शब्द का उपयोग पहली बार हेन्स सेले (1956) के जीवन विज्ञानोंमें किया। उनके अनसार ''इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन शब्द स्टिनजर से हुई है

(17वीं सदी में) जिसका शाब्दिक अर्थ है – कठिनाइयाँ तनाव, दबाव, विपदा या संघर्ष। 18 वीं शताब्दी व 19वीं शताब्दी में इसका अर्थ बल, दबाव या खिंचवा लिया गया। भौतिकी तथा यांत्रिकी मे ं इसका अर्थ है फोर्स या प्रेशर जो किसीव्यक्ति या वस्तु पर दबाने से लगाया जाता है।'' मनोवैज्ञानिक, शास्त्र में इसका अभिप्राय ''स्ट्रेस'' से है जिसे कि आसानीसे अनुकूलित नहीं कर पाता है। मनोविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान मे ं इसकाउपयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। कतिपय अवधारणाएँ कल्पित की जा रहीहै

दबाव–कारकीय स्थितियाँ

बढते दबाव के कारण व्यक्ति मे कई प्रकार के 'ाारिरीक व मानसिक परिवर्तन देखे जा सकते है जो निम्नलिखित है –

1. बढ़ता रक्तचाप
2. हृदय धड़कन
3. दीर्घ एवं शीघ्र स्वास
4. अन्य लक्षण
1. मूड का बिगड़ना
2. नकारात्मक आवेग
3. चिन्ता, तनाव, भय
4. असहायता की अनुभूति
5. उमंग मे कमी

दबाव के कारण :–

आज के वैज्ञानिक औद्योगिक युग में शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, सेवाआदि क्षेत्रों में नित्य प्रति प्रतिकूल स्थितियों का प्रादुर्भाव हो रहा है जिनसेसम्बन्धित व्यक्ति प्रभावित हो जाते हैं। यह बात शिक्षा क्षेत्र में भीप्रशासको, अध्यापकों, शिक्षार्थियों में भी पर्याप्त मात्रा मे देखने को मिलती है।अतः प्रश्न उठता है कि दबावों–तनावों के मुख्य कारण क्या है? दबावोंके कारणों को मुख्यतः दो प्रमुख भागो में बांटा सकते हैः–

1. संगठनात्मक कारण

संगठन से उत्पन्न स्थितियों से जो तनाव–खिंचाव आ जाता है उसेसंगठनात्मक कारक कहते है,

2. व्यक्तिगत कारण

व्यक्ति की अकर्मण्यता–असहिष्णुता,अभद्रता से जो दबाव उभरकर आते हैं, उन्हें व्यक्तिगत कारक कहते हैं।

शोध समस्या कथन :–

''शिक्षक बनने के लिए कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियो में केरियर केप्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन''

शोध उद्देश्य :–

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उद्देश्यों का निर्धारण करनापड़ता है। बिना उद्देश्यों के व्यक्ति अपनी मंजिल तक नही पहुँच पाता हैं।बी.डी. भाटिया के अनुसार :– ''उद्देश्यहीन व्यक्ति उसी प्रकार भटकतारहता है जैसे लहरों के थपडो के बीच पतवार विहीन नौका।''

इसलिय हमने इस शोध पत्र के भी कुछ उद्देश्य निर्धारित किये है जो निम्न प्रकार से है –

1. शिक्षक बनने के लिए की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

2. शिक्षक बनने के लिए प्रथम वर्ग कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एव महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

3शिक्षक बनने के लिए द्वितीय वर्ग कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

4 शिक्षक बनने के लिए तृतीय वर्ग कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :–

शोधकर्त्री द्वारा शोधकार्य को समुचित ढ़ग से पूर्ण करने के लिएपरिकल्पना का निर्माण किया गया है जो इस प्रकार है –

1. की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियोंमें केरियर के प्रति बढते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

2. प्रथम श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवं महिलाविद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3. द्वितीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्था एवंमहिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वाले पुरूष विद्यार्थी एवंमहिला विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन परिसीमन :–

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध कार्य को समय, शक्ति एव साधनो की सीमाओ को देखते हुए शोधकार्य इन्दौर जिले तक ही सीमित रहेगा। जिससे समस्या का परिसीमन अवश्यहो जाता हैं। इस अध्ययन में शैक्षणिक नगरी इन्दौर के शिक्षक भर्ती की तैयारीकराने वाले कोचिंग संस्थानों को सम्मिलित किया गया, जिनमे अध्ययन करनेवाले विद्यार्थियो के केरियर को लेकर बढ़ते दबाव का अध्ययनज्ञात किया गया है।

शब्दकुंजी :– केरियर, प्रशिक्षणार्थी, दबाव, समायोजन,कोचिंग,प्रथम श्रेणी,द्वितीय श्रेणी,तृतीय श्रेणी

न्यायदर्श

किसी भी अनुसंधान की विश्वसनीयता व असफलता न्यादर्श पर ही आधारित होती है। अतःशोध अध्ययन को व्यापक व गहन बनाने के लिये अधोलिखित आधार पर न्यादर्श का चयन किया गया है–

1. न्यादर्श की कुल संख्या 600 है। जिसका विभाजन निम्न प्रकार से किया गया है।

न्यायदर्श तालिका

श्रेणी	पुरूष	महिलाए
प्रथम वग	100	100
द्वितीय वर्ग	100	100
तृतीय वर्ग	100	100
कुल	300	300

मापन उपकरण –

उपकरणो को अनुसंधान का मुकुट कह दिया जाए तो अतिशयोक्ति नही होगी क्योकि इसक अभाव मे विभिन्न प्रकार के दत्तो का सकंलन असंभव हैं।प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दत्त संकलन हेतु नवीन क्षेत्र काउपयोग करते हुए कतिपय साधनों की आवश्यकता होती हैं। इन साधनों को हीशोध उपकरण कहते हैं। अतः उपकरण अनुसंधान रूपी भवन के लिए नींव कीईंट हैं। जिसको अनुपस्थिति में एक अनुसंधानकता अनुसंधानरूपी भवन कानिर्माण नहीं कर सकता।शोध विश्लेषण से पूर्व शोध कार्य हैतु आंकडे एकत्र किये जाते है उसके लिए किसी उपकरण की आवश्यकता होती है।

अतः प्रस्तुत शोधकार्य के लिए स्व निर्मित उपकरण (प्रश्नावली) का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण :–

क्षेत्रवार दबाव स्तर का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है किसर्वाधिक दबाव व्यावसायिक क्षेत्र में 27.00 प्रतिशत प्राप्त हुआ है तथासबसे कम दबाव 25.3 प्रतिशत के साथ पारिवारिक क्षेत्र मे प्राप्त हुआहैं। अन्य क्षेत्रो में शैक्षिक में 26.80 प्रतिशत, आर्थिक में 26.40 प्रतिशत,सामाजिक क्षेत्र में 26.00 प्रतिशत तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में 26.20प्रतिशत प्राप्त हुआ हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि–

शिक्षक भर्ती कीकोचिंग करने से विद्यार्थियों में पारिवारिक, व्यावसायिक, शैक्षिक वआर्थिक दबाव ज्यादा बढ़ रहा है क्योकि कोचिंग मे विद्यार्थियो मेंप्रतियोगी प्रतिस्पर्धा ज्यादा होती है। कोचिंग में टेस्ट परीक्षा में

रेंक कमआना, भर्ती परीक्षा की अनिश्चितता, भर्ती घोटाले, प्रश्नपत्र का बाजार में लीक होना इत्यादि कारणो से विद्यार्थियों में मानसिक, व्यावसायिक वशैक्षिक दबाव ज्यादा बढ़ रहा है।

लिंगानुसार तुलना करने पर भी पुरूष विद्यार्थियों में दबाव स्तरमहिला विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत ज्यादा पाया गया है जिसका मुख्यकारण व्यावसायिक 71.10 प्रतिशत के साथ रहा है। जबकि शैक्षिक क्षेत्र70.30 प्रतिशत, आर्थिक 69.60 प्रतिशत, सामाजिक 66.70 प्रतिशत,मनोवैज्ञानिक 69.80 प्रतिशत, पारिवारिक 67. 40 प्रतिशत दबाव प्राप्त हुआहै। महिला विद्यार्थियो ं में सर्वाधिक दबाव व्यावसायिक क्षेत्र में 64.00प्रतिशत पाया गया है तथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है। अन्य क्षत्रो में भी शैक्षिक 63.70 प्रतिशत, आर्थिक 62.20 प्रतिशत,सामाजिक 63.40 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 61.10 प्रतिशत के साथ महिलाविद्यार्थियों में दबाव प्राप्त हुआ है जो पुरूष विद्यार्थियों के दबाव स्तर सेबहुत कम है। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि महिला विद्यार्थी सामाजिक,पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से समायोजित करनेमे पुरूष विद्यार्थियो की अपेक्षा ज्यादा सक्षम होती है, जबकि व्यावसायिककी चिंता पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों में दबाव का मुख्य कारणरही है।

श्रेणीअनुसार तुलना करने पर भी ज्ञात होता है कि प्रथम श्रेणी केपुरूष विद्यार्थियो में दबाव स्तर का मध्यमान सर्वाधिक 65.20 प्रतिशतव्यावसायिक क्षेत्र में प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियो के व्यावसायिकक्षेत्र के मध्यमान 62.30 प्रतिशत से बहुत ज्यादा है। अन्य क्षेत्रों में भी महिला विद्यार्थियो की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गयाहै। जो इस प्रकार है – शैक्षिक क्षेत्र 63.9 प्रतिशत, आर्थिक 64.60प्रतिशत, सामाजिक 62.40 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 60 प्रतिशत, पारिवारिक58.10 प्रतिशत रहा है। महिला विद्यार्थियों में भी अन्य क्षेत्रां में दबावस्तर शैक्षिक क्षेत्र 51.30 प्रतिशत, आर्थिक 53.40 प्रतिशत, सामाजिक 53.8 प्रतिशत, मनोवैज्ञानिक 53.30 प्रतिशत तथा पारिवारिक क्षेत्र में 55.20प्रतिशत रहा हैं जो पुरूष विद्यार्थियो ं की अपेक्षा न्यूनतम है।

लिंगानुसार तुलना करने से भी ज्ञात होता है कि द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियो में दबाव स्तर का मध्यमान सर्वाधिक 71.90 प्रतिशतव्यावसायिक क्षेत्र में प्राप्त हुआ है जो महिला विद्यार्थियो ं के व्यावसायिकक्षेत्र के मध्यमान 62.40 प्रतिशत से ज्यादा है। अन्य क्षेत्रों में शैक्षिक क्षेत्र70.40 प्रतिशत, आर्थिक 66.50 प्रतिशत, सामाजिक 65.70 प्रतिशत,मनोवैज्ञानिक 70.70 प्रतिशत तथा पारिवारिक 67.20 प्रतिशत के साथमहिला विद्यार्थियो की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सभी क्षत्रो में महिला विद्यार्थियो की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियो में ज्यादा दबाव देखने को मिलता है।

क्षेत्रानुसार तुलना करने स भी पुरूष विद्यार्थियो मं महिलाविद्यार्थियों की अपेक्षा सबसे ज्यादा दबाव मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में 78.80प्रतिशत पाया गया है जो महिला विद्यार्थियों के 70.10 प्रतिशत से बहुत ज्यादा है। अन्य क्षेत्रो में आर्थिक 77.9, शैक्षिक 77.60, सामाजिक 72.1,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

पारिवारिक 76.40, व्यावसायिक 76.20 प्रतिशत के साथ महिलाविद्यार्थियों की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थियो ं में ज्यादा दबाव देखने को मिलता है। इससे पता चलता हैं कि महिला विद्यार्थियो ं की अपेक्षा पुरूष विद्यार्थीकेरियर के प्रति ज्यादा चिंता करते हैं। सामाजिक, व्यावसायिक,

पारिवारिक व मनोवैज्ञानिक रूप से ज्यादा दबावग्रस्त रहते हैं कि यदिनौकरी नहीं लगी या नौकरी में चयन नहीं हुआ तो समाज व परिवार वाले क्या कहेगं।

निष्कर्ष :–

1. की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़तेदबाव का क्षेत्रानुसार विश्लेषण किया गया। सर्वाधिक दबाव व्यावसायिकव शैक्षिक क्षेत्र में पाया गया तथा सबसे कम दबाव सामाजिक व पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया। इसके पश्चात् आर्थिक व मनोवैज्ञानिकक्षेत्रों में भी दबाव देखने को मिला है।

2. पुरूष विद्यार्थी एवं महिला विद्यार्थियों के दबाव की तुलना करने पर महिला विद्यार्थियो की अपक्षेा पुरूष विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गयाहै। व्यावसायिक क्षेत्र में पुरूष विद्यार्थियो ं की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों मेंकम दबाव पाया गया है।

3. प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी की कोचिंग लेने वालेविद्यार्थियों में क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणी की अपेक्षा द्वितीयश्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा दबाव पाया गया है तथा प्रथम व द्वितीयश्रेणी के विद्यार्थियों की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के विद्यार्थियों में ज्यादा दबावपाया गया है। सर्वाधिक दबाव मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक क्षेत्र मे पाया गयातथा न्यूनतम दबाव पारिवारिक क्षेत्र में पाया गया है।

4. कोचिंग करने वाले प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियो में दबाव स्तर क्षेत्रानुसार तुलना करने पर प्रथम श्रेणीको अपेक्षा द्वितीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियो में ज्यादा दबाव पाया गयाहै तथा द्वितीय श्रेणी की अपेक्षा तृतीय श्रेणी के पुरूष विद्यार्थियो मेंदबाव सर्वाधिक पाया गया है।

भावी शोध हेतु कुछ समस्याएँ प्रश्न रूप में इस

प्रकार हो सकती है भावी शोध हेतु सुझाव निम्नांकित हैं –

1. निम्न उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियो मे केरियर के प्रति बढते दबाव एवं समायोजन स्तर का अध्ययन किया जा सकता है।

2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियो मे केरियर के प्रति बढते दबाव एवंसमायोजन स्तर का अध्ययन किया जा सकता हैं।

3. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियो मे केरियर के प्रति बढते दबावएवं समायोजन का अध्ययन किया जा सकता हैं।

4. शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों कीशैक्षिक उपलब्धि एवं दबाव स्तर के मध्य सहसंबंध का अध्ययन कियासकता हैं।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सन्दर्भ :

अग्निहोत्री, रवीन्द्र : ''आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएं और समाधान'',राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

अग्रवाल, जे.सी.: ''एलीमेंट्री गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग'', आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।

अस्थाना, बिपिन : ''मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

बुच एम.बी. (1983) : ''तृतीय सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन'', सोसायटी ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एवं डवलपमेन्ट, बड़ौदा।

बुच, एम.बी. (1988) : ''पांचवा सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्ज'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

बुच, एम.बी. (1993) : ''छठा सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

बोर्ग, डब्ल्यू. आर. (1963) : ''एजुकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोड्क्शन'', लॉगमांस ग्रीन एण्ड लिमिटेड, न्यूयॉर्क।

बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1978) : ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', प्रेन्टिसहॉल ऑफ इण्डियाप्रा.लि., नई दिल्ली।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language